नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय

B.A.Hindi(Honours)Part-2,Paper - 3

अछूत कहानी :एक समीक्षा

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने जीवन में कुल आठ कहानियां लिखी हैं- 'धनवर्षण', 'मंत्र-तंत्र', 'व्यवसाय-बुद्धि', 'बड़ा कौन है', 'बड़ा क्या है', 'देवता की मनौती', 'प्रतिशोध' और 'अछूत' ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक ऐसे लेखक हैं जो जीवन के यथार्थ को खुली आंखों से देखते हैं ।'अछूत' की कहानी जीवन की उसी पक्षधरता का एक सोद्देश्य परक चित्रण है । कहानी के माध्यम से उन्होंने मानवीय संवेदना को मूर्त रूप देने का सफल प्रयास किया है । 'अछूत' कहानी का मुख्य पात्र नीमू नामक एक अछूत है। द्विवेदी जी ने नीमू के माध्यम से मानवीय मन के भीतर के सत और उदात्त संवेदना को उजागर करने का प्रयास किया है । अछूत के माध्यम से कहानीकार उस दौर के सामाजिक वातावरण को उजागर करता है जिससे समाज आज भी ग्रसित है । कथाकार ने दिखाया है कि कैसे अछूत को निम्न स्तर का प्राणी समझा जाता है, जबकि उसके भीतर भी मनुष्य की विराट भावना हो सकती है ।

अछूत कहानी में कुल दो ही पात्र हैं- एक नीमू जोकि भंगी है अर्थात अछूत और दूसरा रानी जोकि वेश्या है अर्थात पतिता । कहानी के आरंभ में नीमू राय बहादुर साहब के यहां से ठंड की रात में बेगारी करके अपने फटे धोती कुर्ता में लौट रहा है , जहां बारिश के कारण ठंड और बढ़ जाती है , जिससे नीमू कराहते हुए रास्ते में ही जमीन पर गिर पड़ता है । कराह की आवाज जब रानी नामक वेश्या के कानों में पड़ती है तो वह दौड़ी दौड़ी आती है और किसी को इस हालत में देखकर तुरंत उसे अपने भवन में ले जाती है। सेवा भाव से उसे ठीक करती है । रानी की यह करुणा देख नीमू भाव-विह्वल हो उठता है , और यहां भाई बहन का एक रिश्ता कायम हो जाता है । कहानी का अंत भी कुछ इसी तरह से किया गया है । अंत में फर्क यह है कि मुसीबत अब रानी पर आ पड़ी है । रानी से एक व्यक्ति की हत्या हो जाती है , जिस कारण रानी को पकड़ लिया जाता है । नीमू को जब यह खबर मालूम पड़ती है तो वह उसे बचाने के लिए बेचैन हो उठता है । वह जज की सुनवाई के दौरान, जज के सामने आकर रानी के लाख ना-ना करने के बावजूद उसकी हत्या को अपने सर ले लेता है । यहां अछूत के माध्यम से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मानवीय संवेदना का महानतम रूप प्रस्तुत किया है कि कैसे एक छोटी सी जाति में मनुष्यता की विराट भावना छिपी है । अछूत कहानी पर यदि हम दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि यहां नीमू के साथ-साथ रानी भी अछूत है, क्योंकि रानी का हुस्न तो सभी को चाहिए पर उसके लिए हमदर्दी किसी के पास नहीं है क्योंकि वह एक वेश्या है , और इसीलिए वह संदेह की पात्र है । कहानी में नीमू फटे पुराने कपड़े में बेगारी करके जैसे -तैसे अपना जीवन काटता है । वह जब राय बहादुर साहब की बेगारी करके ठंड भरी रात को लौट रहा था तो उच्च वर्ग के राय साहब को उसकी दीन-हीनता पर तनिक भी फ्रिक नहीं है , सिर्फ वह उससे अपना काम लेना जानता है और फिर उसे छोड़ देता है । यूँ कहें कि 'Use and Throw' वाली स्थिति है ।

इस कहानी के माध्यम से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अछूत के चरित्र को एक व्यापक फलक देने की कोशिश की है । समाज में फैली हुई वर्गीय एवं जातीय व्यवस्था से उपजी हुई समस्या की ओर कथाकार ने बड़े जीवंत स्तर पर रेखांकन किया है । जब नीमू के स्वयं को अछूत बताने पर रानी तुरंत उसे चुप करा देती है और उसकी सेवा में यह कहते हुए लग जाती है - "तुम कोई भी हो सो जाओ भैया । मैं आज तक यही जानती थी कि केवल मैं ही पतिता हूं ।" कथाकार ने इस कथन के माध्यम से एक ही साथ नीमू और रानी के चरित्र की विशिष्टता

को उजागर किया है ।

कहानी की भाषा सहज ,सरल और प्रवाहमय है ।जहाँ तक शैली की बात है तो कहानी कहने की कला थोड़ी खटकती जरूर है ,क्योंकि कहानी लोक-कथा सी मालूम पड़ती है । फिर भी कहानी में द्विवेदी जी की अपनी यथार्थवादी दृष्टि की एक अलग विशेषता है ।अपने प्रवाहमय एवं प्रांजल भाषा के कारण द्विवेदी जी ने पाठकों को बाँधने का सफल प्रयास किया है ।

आवयश्क निर्देश - विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि पाठ्य पुस्तक में दिए गए अंश का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें और प्रस्तुत अभ्यास के प्रश्नों का तर्क आधारित उत्तर देने का प्रयास करें । विद्यार्थियों / परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु यह 'ई कंटेंट' संक्षिप्त रूप में तैयार किया गया है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी

नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय